9. यीशु ने राजकर्मचारी के पुत्र को चंगा किया
यहुन्ना 4:43-54

शुरुआती प्रश्न: क्या आप किसी ऐसे व्यक्ति के बारे में सोच सकते जो हमेशा आपका गर्मजोशी से स्वागत करता हो? वह ऐसा क्या करते हैं जिससे आपको हमेशा अच्छा लगता है?

> [43]फिर उन दो दिनों के बाद वह वहाँ से कूच करके गलील को गया। [44]क्योंकि यीशु ने आप ही साक्षी दी, कि भविष्यद्वक्ता अपने देश में आदर नहीं पाता। [45]जब वह गलील में आया, तो गलीली आनन्द के साथ उस से मिले; क्योंकि जितने काम उस ने यरूशलेम में पर्व के समय किए थे, उन्होंने उन सब को देखा था, क्योंकि वे भी पर्व में गए थे। [46]तब वह फिर गलील के काना में आया, जहाँ उसने पानी को दाखरस बनाया था: और राजा का कर्मचारी था जिस का पुत्र कफरनहूम में बीमार था। [47]वह यह सुनकर कि यीशु यहूदिया से गलील में आ गया है, उसके पास गया और उस से विनती करने लगा कि चलकर मेरे पुत्र को चंगा कर दे: क्योंकि वह मरने पर था। [48]यीशु ने उस से कहा, जब तक तुम चिन्ह और अद्भुत काम न देखोगे तब तक कदापि विश्वास न करोगे। [49]राजा के कर्मचारी ने उस से कहा; हे प्रभु, मेरे बालक की मृत्यु होने के पहिले चल। [50]यीशु ने उस से कहा, जा, तेरा पुत्र जीवित है: उस मनुष्य ने यीशु की कही हुई बात की प्रतीति की, और चला गया। [51]वह मार्ग में जा रहा था, कि उसके दास उस से आ मिले और कहने लगे कि तेरा लड़का जीवित है। [52]उसने उनसे पूछा कि किस घड़ी वह अच्छा होने लगा? उन्होंने उस से कहा, कल सातवें घण्टे में उसका ज्वर उतर गया। [53]तब पिता जान गया, कि यह उसी घड़ी हुआ जिस घड़ी यीशु ने उस से कहा, तेरा पुत्र जीवित है, और उसने और उसके सारे घराने ने विश्वास किया। [54]यह दूसरा आश्चर्यकर्म था, जो यीशु ने यहूदिया से गलील में आकर दिखाया। (यहुन्ना 4:43-54)

अपने देश (गृहनगर) में आदर नहीं

सामरी स्त्री के विषय में हमारे पिछले अध्यन में, हमें बताया गया है कि यीशु सामरी क्षेत्र में पूरे दो दिन रुक उत्तर जाने से पूर्व सूखार के लोगों के बीच सेवकाई करता रहा। जब वह गलील में पहुँचा, हमें बताया गया है कि गलील के लोगों ने उसका स्वागत किया। (पद 45) हमें यह पूछना पड़ेगा कि यहुन्ना ने यह क्यूँ लिखा कि यीशु ने कहा था कि भविष्यद्वक्ता अपने देश (गृहनगर) में आदर नहीं पाता, लेकिन फिर बताता है कि गलीली लोगों ने उसका स्वागत किया। यहाँ हमें एक प्रकार का विरोधाभास प्रतीत होता है। कुछ लोग यह कहेंगे कि यहुन्ना इस सन्दर्भ में बात कर रहा था कि यरूशलेम के यहूदियों ने उसका स्वागत नहीं किया, इसके बावजूद भी कि वह यहूदा के बेतलेहम में जन्मा था, जो यरूशलेम से निकट की पैदल यात्रा की दूरी पर है। यहुन्ना ने पहले ही लिख दिया है कि यीशु ने यरूशलेम में मंदिर खाली कराते समय कोड़े का इस्तेमाल कर पहले ही मधुमक्खी के छत्ते में हाथ डाल दिया था (यहुन्ना 2:15-16), तो वहाँ के धार्मिक अग्वे तो निश्चित ही उसका आदर नहीं कर रहे थे। यहुन्ना गवाही देता है कि यहुन्ना बप्तिस्मा देने वाले के द्वारा यीशु के बपतिस्मे के पश्चात्, वह सूखार में रुकने की बजाय सीधे उत्तर में नाज़रथ को गया। यह यहीं था कि यीशु ने यशायाह की पुस्तक से पढ़ा, जिसके पश्चात् उसने कहा कि प्रभु का आत्मा गरीबों को सुसमाचार सुनाने, बन्धुओं के छुटकारे की घोषणा करने के लिए और अन्धों की दृष्टि पाने के लिए उस पर है। उसने एक ऐसा खंड पढ़ा जिसे सब लोग मसीह के बारे में होने का समझते थे, और वह यह पढकर समाप्त करता है कि "आज ही यह लेख तुम्हारे सामने पूरा हुआ है।" (लूका 4:16-21) लूका गवाही देता है कि यह यहाँ उसी के अपने नगर में था कि यीशु ने कहा, "और उस ने कहा; मैं तुम से सच कहता हूँ, कोई

भविष्यद्वक्ता अपने देश (गृहनगर) में मान- सम्मान नहीं पाता।" नाजरथ के लोगों की प्रतिक्रिया उसे उस पहाड़ की चोटी पर लेजाकर जिसपर नगर बसा हुआ था, उसे वहाँ से नीचे गिराने की कोशिश की थी। (लूका 4:29)

एक भविष्यद्वक्ता का उसके अपने गृहनगर में आदर क्यों नहीं होता? आप क्या सोचते हैं कि उन्हें वहाँ क्यों सरहाया नहीं जाता? क्या आप सोचते हैं कि परमेश्वर के पुरुष या स्त्री को अपने गृहनगर में वह होने में जो परमेश्वर उनके लिए चाहता है, घुटन हो सकती है?

जब परमेश्वर का आत्मा हम पर उतरता है, हमें स्वर्ग से सामर्थ प्राप्त होती है (प्रेरितों 1:8), और जब हम परमेश्वर के वचन पर भरोसा रख विश्वास में कदम उठाते हैं, तो हमारे पास परमेश्वर के कार्य करने की महान क्षमता है। आपको, अगर आप मसीही हैं, मसीह के लहू के द्वारा, जीवित परमेश्वर के पुत्र और पुत्री ठहराया गया है। बाइबिल बताती है: "क्योंकि तुम सब उस विश्वास करने के द्वारा जो मसीह यीशु पर है, परमेश्वर की सन्तान हो।" (गलातियों 3:16) हमारे परमेश्वर के साथ वाचा के सम्बन्ध में होने के कारण हमारे पास विशाल क्षमता है, और बदले में उसके लिए हमारा उपहार है कि हम उस क्षमता के साथ क्या करते हैं। (मत्ती 11:11-12) वह लोग हैं, ख़ास तौर से हमारे गृहनगर से, जो मसीह द्वारा हमें दी गयी क्षमता पर सीमाएं लगा देते हैं। उनके लिए, आप तो केवल मछवारे के पुत्र हैं, या मैकेनिक, या बैरा, या बावर्ची, या फिर जैसे भी आपके गृहनगर में लोग आपको देखते हों। वचन हमें बताते हैं कि जब हम नए सिरे से जन्म लेते हैं, सब बातें नई हो जाती हैं!

> [16]सो अब से हम किसी को शरीर के अनुसार न समझेंगे, और यदि हम ने मसीह को भी शरीर के अनुसार जाना था, तौभी अब से उसको ऐसा नहीं जानेंगे।[17]सो यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है: पुरानी बातें बीत गई हैं; देखो, वे सब नई हो गईं। (2 कुरिन्थियों 5:16-17)

इसका अर्थ यह है कि हमारे लिए सभी तरह संभावनाएं खुली हैं, और हमारा अतीत हमारे लिए मृत हो चुका है। *पुरानी बातें बीत गई हैं; देखो, वे सब नई हो गईं।* लेकिन, और लोग परमेश्वर की तरह क्षमा नहीं करते। हमारे सारे पुराने गुण और कार्य, अच्छे और बुरे दोनों, हमें अच्छे से जानने वालों को लम्बे अरसे तक याद रहते हैं। यह उनके मनों में हमारी एक तस्वीर बना सकते है, और हमारे लिए उसे तोड़ उसमें से स्वतंत्र हो निकल जाना मुश्किल हो सकता है। बजाय उस पुरानी तस्वीर पर विश्वास करने के जो हमें प्रस्तुत की जाती है, या फिर उन झूठों को मानने के जो हमारे प्राणों का शत्रु हमें बताता है, हमें उसे थामे रहना है जो परमेश्वर का वचन हमारे बारे में कहता है। उसका वचन, हमारा "बौद्धिक भोजन," ही वह चीज़ हैं जिससे हमें अपने मनों के नए हो जाने के द्वारा रूपांतरित होते चले जाना है। परमेश्वर का आत्मा हमें उस मानसिक तस्वीर को तोड़ स्वतंत्र होने में हमारी मदद करेगा जो हमारे विचार अक्सर चित्रित करते हैं। हमारा सामना हमेशा ऐसे लोगों से होगा जो हमारी क्षमताओं पर सीमाएं लगायेंगे, लेकिन हमें वचन द्वारा बताया गया है कि:

> जो मुझे सामर्थ देता है उसमें मैं सब कुछ कर सकता हूँ। (फिलिपियों 4:13)

आपके गृहनगर में ऐसे कई लोग हैं जिन्होंने आपको बड़े होते हुए प्रभावित किया है। अगर आप उनके शब्दों को सुनते हैं तो उनके पास आपको अब भी प्रभावित करने की क्षमता है। शब्द जैसे, "इसका तो कभी कुछ नहीं हो सकता," "यह तो हमेशा से ऐसा ही है," या फिर शायद वह कहें, "यह तो बाहरवीं भी पास नहीं कर पाया, तो फिर ..... तो भूल ही जाओ! (जो कुछ भी यह हो)" लोग हमें अपने शब्दों द्वारा प्रभावित करते हैं। एकमात्र प्रतिउत्तर अपने आप को परमेश्वर के वचन को स्मरण दिलाना है:

उस ने उनसे कहा, अपने विश्वास की घटी के कारण: क्योंकि मैं तुम से सच कहता हूँ, यदि तुम्हारा विश्वास राई के दाने के बराबर भी हो, तो इस पहाड़ से कह सकोगे, कि यहाँ से सरक कर वहाँ चला जा, तो वह चला जाएगा; और **कोई बात तुम्हारे लिये अन्होनी न होगी।** (मत्ती 17:20; बल मेरी ओर से जोड़ा गया है)

उसमें हमारे ऊँचाइयों तक उड़ने में एकमात्र रूकावट या सीमा हमारे मनों की रुकावटें या सीमाएं हैं। आइये हम चार मिनट में एक मील दौड़ने के उदहारण को लें:

"चार मिनट में एक मील दौड़ना याद है? प्राचीन यूनान के समय से लोग इसे हासिल करने की कोशिश में लगे हैं। यहाँ तक कि, लोक-साहित्य हमें बताता है कि यूनानी यह सोचते हुए धावकों के पीछे शेर छोड़ देते कि ये उनको और तेज़ दौड़ाएगा। उन्होंने शेर का दूध पीने के द्वारा भी कोशिश की, (जो उनके लिए स्टेरोइड के समान था), - यह वो नहीं है जो आपको स्वास्थ्य का समान बेचने वाली दुकान पर मिलता है, यह तो असली चीज़ है। (हाँ, असली शेरों से दूध। "शेर का दूध निकलने" की कल्पना करें! मैं सोचता हूँ कि उनकी दौड़-भाग की उपलब्धि से परे, सिर्फ यही बात कि कोई एक शेर का दूध निकाल सकता है उन्हें यश का पात्र बनाता है!) लेकिन उनकी बड़ी निराशा इसमें थी, कि जो कुछ भी उन्होंने किया कारगर न हुआ। चार मिनट में एक मील दौड़ना हासिल न हुआ। तो उन्होंने यह निर्णय लिया कि एक व्यक्ति के लिए चार मिनट या उससे कम में एक मील दौड़ना असंभव है। और एक हज़ार वर्ष तक सबने ऐसा विश्वास किया। उन्होंने कहा, हमारी हड्डियों की संरचना ठीक नहीं है। वायु से प्रतिरोध बहुत अधिक है। हमारे फेफड़ों की क्षमता पर्याप्त नहीं। इसके लाखों कारण थे।

फिर एक व्यक्ति, मात्र एक अकेले व्यक्ति ने, यह साबित कर दिया कि वह डॉक्टर, प्रशिक्षक, खिलाड़ी और उससे पहले के लाखों धावक जिन्होंने उससे पहले प्रयास किया और विफल रहे, सब गलत थे। और, आश्चर्य-कर्मों का आश्चर्य-क्रम, जिस वर्ष रॉजर बैनिस्टर ने चार मिनट के भीतर एक मील हासिल किया उसके अगले वर्ष, सैंतीस और लोगों ने यह मुकाम हासिल किया। उसके अगले वर्ष तीन सौ धावकों ने चार मिनट से कम में एक मील हासिल किया। कुछ वर्ष पूर्व न्यू यॉर्क की एक दौड़ में, तेरह में से तेरह धावकों ने चार मिनट से कम समय में एक मील हासिल किया। दूसरे शब्दों में, कुछ दशक पूर्व वह धावक जो न्यू यॉर्क में आख़िरी पायदान पर आता उसे ऐसा माना गया जैसे कि उसने असंभव हासिल कर लिया हो।

ऐसा क्या हुआ? प्रशिक्षण में तो कोई क्रांति नहीं आई। किसी ने वायु प्रतिरोध को नियंत्रित करना नहीं सीख लिया। मानवीय हड्डियों की संरचना या शारीर की क्रिया एकदम से बेहतर नहीं हो गई। लेकिन मानवीय आचरण हुआ।"[1]

औरों को या अपने मन को भी ऐसी रुकावटें न खड़ी करने दें जो आपको वह सब कुछ बनने से रोकेंगी जो आप परमेश्वर में हो सकते हैं। वचन कहता है, "और इसी के लिये मैं उस की उस शक्ति के अनुसार जो मुझ में सामर्थ के साथ प्रभाव डालती है तन मन लगाकर परिश्रम भी करता हूँ।" (कुलुसियों 1:29) गृहनिवास के आचरण से मुक्त हो स्वतंत्रता पाइए!

अतीत के ऐसे कौन से शब्द हैं जिन्होंने आपको चोट पहुँचाई जो आज भी आप आसानी से याद करते हैं?

---

[1] डेवलपिंग द लीडर विदिन यू, द्वारा जॉन मैक्सवेल, नेल्सन पब्लिशर्स, पृष्ठ 95 * लेखक की टिपण्णी

राजकर्मचारी का विश्वास

जिस खंड का अध्यन हम कर रहे हैं, उसमें प्रेरित यहुन्ना इस बात का ज़िक्र भी नहीं करते कि यीशु नाज़रथ गया था, वह तो केवल यह कह उसके वहाँ न ठेहरने का कारण बताता है, कि उसे उसके देश में कोई आदर न मिला। यहुन्ना लिखता है कि वह उत्तरी दिशा में आगे गलील के काना में जाता है। गलील के लोगों द्वारा उसका आनंद के साथ स्वागत किया गया। यह नतनएल का गृहस्थान था (यहुन्ना 21:2), जहाँ संभवत: वह एक रात रुके होंगे। यह वही स्थान है जहाँ पानी को दाखरस में बदला गया था, जो यीशु द्वारा किया पहला आश्चर्य-कर्म था। (यहुन्ना 2:11) यहुन्ना उनके द्वारा उसका स्वागत करने का एक और कारण बताता है कि जितने काम उसने फसह के पर्व के समय किए थे, उन्होंने उन सब को देखा था, क्योंकि वे भी पर्व में गए थे। (पद 45) तो फसह के पर्व में ऐसा क्या हुआ कि वह यीशु के गलीली होने के विषय में गर्व से भर गए? यहुन्ना हमें पहले ही यीशु के मंदिर में व्यापारियों की पीढ़ियों को उल्ट उनपर कोड़े का प्रयोग करने का वाक्या बता चुका है। जो दूसरी बात यहुन्ना यरूशलेम में होने का वर्णन करता है वह हैं उसके द्वारा किये आश्चर्य-क्रम:

> जब वह यरूशलेम में फसह के समय पर्व में था, तो बहुतों ने उन चिन्हों को जो वह दिखाता था देखकर उसके नाम पर विश्वास किया। (यहुन्ना 2:23)

क्या आप नहीं सोचते कि जब कफरनहूम के गलीली फसह के पर्व से वापस घर लौटे होंगे तो उनमें यीशु ने जो किया था उसके विषय में एक रोमांच का वातावरण होगा? वह राजा का कर्मचारी जो कफरनहूम में रहता था उसकी पूरी अपेक्षा थी कि यीशु उसके पुत्र को चंगा कर सकता है क्योंकि उसने यरूशालेम के आश्चर्य-कर्मों के चिन्हों की कहानियाँ सुनी थीं। यूनानी शब्द जिसका अनुवाद "राजा का कर्मचारी" के रूप में किया गया है, *बसिलिकोस* है, अर्थात "राजा का आदमी"। यह एक ऊँचे पद का व्यक्ति है, एक ऐसा आदमी जो हेरोदेस के भरोसेमंद अधिकारीयों में से एक है। उसका पद अब तो कोई मायने नहीं रखता - वह अपने बेटे की चंगाई की आवश्यकता में एक आम व्यक्ति था। जब वह मायूसी से अपने पुत्र की बिगडती तबियत देख रहा था, और जब उसने यीशु के कार्यों के बारे में सुना, जो आश्चर्य-कर्म वह कर रहा था, तो उसमें परमेश्वर में आशा और उसमें विश्वास बढ़ने लगा।

जीवनों में बदलाव, प्रार्थनाओं के उत्तर, चंगाईयों की गवाही की कौन सी ऐसी कहानियाँ आपने सुनी हैं जिन्होंने आपको प्रभावित और उत्साहित किया है? एक दूसरे के साथ संक्षेप में उन्हें बाँटें।

राजा के अधिकारी के विश्वास में बढौतरी के चार उछाल

1) **उसने इतना विश्वास किया कि वह 19 मील यात्रा कर यीशु से मिलने आया।** इस राजकर्मचारी के विषय में कुछ ऐसा है जो विचारने के लिए अद्भुत है। सबसे पहले, उसने परवरिश और अपने बेटे का ध्यान रखने का ज़िम्मा अपनी पत्नी पर ही नहीं छोड़ा, वह स्वयं आया। वह तो आसानी से किसी सेवक को भेज यीशु को अपने बेटे के पास आने का बुलावा भेजने में सही ठहरता; आखिरकार, वह तो शायद अपनी आधिकारिक भूमिका में काफी व्यस्त होगा। हमें बताया गया है कि वह अपने पुत्र के साथ कफरनहूम में गलील के समुद्र के तट पर रहता था। इसके अनुसार उसकी यात्रा लगभग उन्नीस मील की थी। अगर आप उस क्षेत्र का नक्षा देखना चाहते हैं, तो इंटरनेट पर इस स्थान पर देख सकते हैं: http://bibleatlas.org/full/cana.htm

वह यहाँ बड़ा जोखिम उठा रहा था क्योंकि वह इस समय का उपयोग डॉक्टर के पास जाने में कर सकता था। लेकिन, उसने अपना विश्वास मसीह पर रखा और निर्णय लिया कि अगर वो खुद जाएगा, तो यीशु से उन्नीस मील

की यात्रा कर कफरनहूम आकर अपने बेटे पर हाथ रखने की विनती करेगा। मुझे यकीन है कि उसका काना तक की पाँच घंटे की पैदल यात्रा या समय, अपने बेटे को खोने के विचार से टूटेपन और व्यथा से भरा होगा। क्या उसने सही चुनाव किया है? क्या होगा अगर यीशु व्यस्त होगा? क्या वो वह बातें कर सकता है जो लोग कहते हैं वह कर सकता है? क्या मेरे पास इतनी दूर जा यीशु को वापस लाने के लिए पर्याप्त समय है? हो सकता है लड़का पिता के निकलने से पहले कोमा में चला गया हो। ऐसा प्रतीत होता है कि इस अधिकारी को निश्चित था कि उसका बेटा मौत की ओर जा रहा है।

2) वह यीशु से मदद की भीख माँगता है। पद 47 में वह *यीशु से चलने की विनती* करने लगा, अपूर्ण भूतकाल में है, तो इसे इस तरह पढ़ना चाहिए कि वह उससे बारंबार विनती कर रहा था। यह आदमी हार न मानने वाला था; उसने इस बात का जोखिम उठाते हुए कि यीशु उसके घर आ उसके पुत्र के लिए प्रार्थना करेगा, अपनी सारी आशा यीशु में रख दी थी। वह जानता था कि उसका पुत्र मृत्यु के निकट है (पद 47), और अब बस कुछ समय और है। उसने अति-आवश्यकता और मायूसी के साथ विनती करी।

शायद अब आपके पास अपने प्रियजन को वह बातें बोलने का अच्छा समय था जो हमेशा से आप चाहते या महसूस करते थे लेकिन कभी कही नहीं। शायद अब साथ मिलकर वह सारी बातें करने का समय है जिन्हे साथ करने की बात आप हमेशा से किया करते थे। हम सभी सोचते हैं कि अभी तो काफी समय है, लेकिन जीवन हमेशा हमारी अपेक्षा के अनुसार नहीं चलता। जो आप आज कर सकते हैं उसे कल तक न छोडें। "मैं तुमसे प्रेम करता हूँ" जैसे शब्द कहना कुछ लोगों के लिए काफी कठिन होता है। मुझे यकीन हैं कि इस व्यक्ति ने यह पाँच घंटे की यात्रा ज्यादा से ज्यादा तेज़ चल कर पूरी करी थी, और निश्चित ही यह उसके लिए प्रार्थना भरा समय भी रहा होगा। अपने पुत्र को खो देने का विचार मात्र ही असहनीय था। यह एक ऐसा आदमी था जो गहराई से परवाह करता था, और अपने पुत्र के ठीक हो जाने के लिए कुछ भी करेगा। क्या आप ऐसा नहीं करेंगे?

यीशु का उत्तर तब तक काफी कठोर प्रतीत होता है जबतक हम यह नहीं समझ लेते कि यह न केवल उसके बल्कि भीड़ के लिए भी था। ऐसा प्रतीत होता है कि यह लोगों के लिए ऐसे तमाशे जैसा बन गया था जहाँ लोग प्रभु के अगले सनसनीखेज़ कार्य के इंतज़ार में थे। जब राजकर्मचारी आया, अपने बेटे के लिए प्रार्थना करने के लिए यीशु से साथ चलने की अपनी विनती में और वज़न डालने के लिए, वह संभवतः अपनी वर्दी में था। यह आदमी, जो अपनी वर्दी पहने था और बहुत मायूस था, और ज्यादा भीड़ जुटा रहा था जो यह देखने के लिए उत्सुक थे कि आखिर हो क्या रहा है। यीशु मानवीय स्वभाव, और मानवीय मंशाएं जानता था। यीशु उसे अपनी विश्वास की यात्रा में और आगे ले जाना चाहता था। वह चाहता था कि वो बिना देखे विश्वास करे।

> [48]यीशु ने उस से कहा, जब तक तुम चिन्ह और अद्भुत काम न देखोगे तब तक कदापि विश्वास न करोगे। (पद 48)

ऊपर के शब्दों से ऐसा प्रतीत होता है कि प्रभु ऐसे पुरुषों और स्त्रियों की खोज में है जो उसपर तब भी विश्वास और भरोसा रखेंगे जब वह परमेश्वर के आश्चर्य-कर्म नहीं देखते। पुन: उत्थान के बाद, यीशु ने अपने हाथ-पैरों की कीलें को दिखाते हुए, स्वयं को थोमा पर प्रकट किया। उसने उसे कहा, "धन्य हैं वे जिन्होंने बिना देखे विश्वास किया।" (यहुन्ना 20:29) यीशु अपने लोगों से उस समय भी उसपर भरोसा रख आगे कदम बढ़ाने की लालसा रखता है जब वह विश्वास करने का कोई प्रमाण नहीं देखते।

[22]यीशु ने उस को उत्तर दिया, कि परमेश्वर पर विश्वास रखो। [23]मैं तुम से सच कहता हूँ कि जो कोई इस पहाड़ से कहे; कि तू उखड़ जा, और समुद्र में जा पड़, **और अपने मन में सन्देह न करे, वरन प्रतीति करे, कि जो कहता हूँ वह हो जाएगा**, तो उसके लिये वही होगा। [24]इसलिये मैं तुम से कहता हूँ, **कि जो कुछ तुम प्रार्थना करके मांगों तो प्रतीति कर लो कि तुम्हें मिल गया, और तुम्हारे लिये हो जाएगा।** (मरकुस 11:22-24)

परमेश्वर यह क्यों चाहता है कि हम देखने से पहले विश्वास करें?

3) **उसने येशु के इस वचन पर विश्वास किया कि उसका पुत्र जिएगा।** येशु ने उस आदमी से कहा, "जा, तेरा पुत्र जीवित है" (पद 53) अगर यह मैं होता, मैं तो यह कहता, "क्या, कोई चिन्ह नहीं! कोई प्रार्थना नहीं! यह क्या है? ऐसे तो नहीं होता! मैं यह कैसे जान सकता हूँ कि जो तू कह रहा है वैसा ही होगा? क्या आप ये कह रहे हैं कि मुझे तो बस ये मान लेना चाहिए कि आपके बिना आए और हाथ रख कर प्रार्थना करे बिना ही चंगाई का कार्य हो गया?"

मुझे यकीन है कि इस आदमी के हृदय में कई प्रश्न होंगे लेकिन उसने उन्हें बाहर निकलने नहीं दिया। हमें बताया गया है कि उसने येशु की बात की प्रतीति की और चला गया। कभी-कभी यीशु हृदयों को प्रकट करने के लिए मन का अपमान करता है। उदहारण के लिए, नमान की कहानी लीजिए। नमान एक महान आदमी और एरम की सेना का सेनापति था। उसे कोढ़ हो गया था और उसने महान इजराइली भविष्यद्वक्ता एलीशा द्वारा चंगाई चाही:

[9]तब नमान घोड़ों और रथों समेत एलीशा के द्वार पर आकर खड़ा हुआ। [10]तब एलीशा ने एक दूत से उसके पास यह कहला भेजा, कि तू जाकर यरदन में सात बार डुबकी मार, तब तेरा शरीर ज्यों का त्यों हो जाएगा, और तू शुद्ध होगा। [11]परन्तु नमान क्रोधित हो यह कहता हुआ चला गया, कि मैंने तो सोचा था, कि अवश्य वह मेरे पास बाहर आएगा, और खड़ा होकर अपने परमेश्वर यहोवा से प्रार्थना करके कोढ़ के स्थान पर अपना हाथ फेरकर कोढ़ को दूर करेगा! [12]क्या दमिश्क की अबाना और पर्पर नदियाँ इस्राएल के सब जलाशयों से उत्तम नहीं हैं? क्या मैं उन में स्नान करके शुद्ध नहीं हो सकता हूँ? इसलिये वह जलजलाहट से भरा हुआ लौटकर चला गया। [13]तब उसके सेवक पास आकर कहने लगे, हे हमारे पिता यदि भविष्यद्वक्ता तुझे कोई भारी काम करने की आज्ञा देता, तो क्या तू उसे न करता? फिर जब वह कहता है, कि स्नान करके शुद्ध हो जा, तो कितना अधिक इसे मानना चाहिये। [14]तब उस ने परमेश्वर के भक्त के वचन के अनुसार यरदन को जाकर उस में सात बार डुबकी मारी, और उसका शरीर छोटे लड़के का सा हो गया; और वह शुद्ध हो गया। (2 राजाओं 9-14)

निश्चित ही परमेश्वर उससे दमिश्क की नदियों में दुबकी लगवा सकता था। लेकिन नमान के विश्वास पर सीमाएं लगी हुई थीं। उसने सोचा था कि एलिशा अपने घर से निकल कर कोढ़ के स्थान पर अपना हाथ फेरेगा और बस, चंगाई हो जाएगी। परमेश्वर ने उसका हृदय प्रकट करने के लिए उसके मन का अपमान किया। सबसे पहले तो, एलिशा उससे बात करने के लिए अपने घर से बाहर तक नहीं आया; उसने अपने सेवक द्वारा नमान के लिए एक सन्देश भेजा। उसे यरदन के मैले पानी में डुबकी लगाने में अपने आप को दीन करना था। उसने अपने अभिमान के कारण अपनी चंगाई लगभग खो ही दी। कभी-कभी परमेश्वर हमें कोई मूढ़ कार्य करने को कहने के द्वारा हमारी आज्ञाकारिता को परखता है। मुझे एक साथी पासबान का उस समय के बारे में बताना याद है जब उसकी कलीसिया को कोल्चेस्टर, एसेक्स, इंग्लैंड में परमेश्वर ने दर्शन दिए। दो काफी नए मसीही लोगों ने अभी चंगाई के विषय में शिक्षा को सुना था। एक की कमर में भयानक दर्द था और दूसरी के तलवे में एक झंझनाहट का एहसास, जिसे

उसने इस तरह से समझा कि परमेश्वर उसकी मित्र को उसकी कमर पर खड़ा होने के द्वारा चंगाई देना चाहता था! दोनों इसके लिए राज़ी थे, और क्या आप मानेंगे, परमेश्वर ने कमर दर्द पूरी तरह चंगा कर दिया। आज्ञाकारिता का एक कार्य और परमेश्वर ने कितने अद्भुत तरीके से कार्य किया। मैं नहीं सोचता कि हमें ऐसा करना चाहिए; यह विश्वास का कार्य परमेश्वर के विश्वास का आदर करने वाला एक ही बार का कार्य था, वैसे ही जैसे नमान ने सात बार यरदन नदी में डुबकी लगाई। परमेश्वर कई बार हृदय की परीक्षा लेने के लिए मन का अपमान करता है। राजकर्मचारी ने यीशु के वचन को मानने का चुनाव किया। वह चला गया और उसे इस बारे में शांति थी।

हमें बताया गया है कि वो अगले दिन तक घर नहीं पहुँचा था। क्या हुआ था? शायद वह अपने विश्वास में इतना दृढ़ था कि वह बाकी दोपहर वहीं रुका रहा। जब वह घर पहुँचा, तब उसे पता चला कि आश्चर्य-कर्म पहले दिन सातवें घंटे में हुआ था (पद 52), ठीक उसी समय जब येशु ने कहा था, "तेरा पुत्र जीवित है।" (पद 53) सातवाँ घंटा दोपहर का एक बजे होगा, जिससे उसके पास घर को पाँच मील की यात्रा करने के लिए पर्याप्त समय था, लेकिन किसी कारण से वह अगले दिन तक घर वापस नहीं गया। मैं जब उससे मिलूँगा तो इस बारे में पूछना चाहूँगा!

4) **उसने और उसके सारे घराने ने विश्वास किया।** जब वह घर पहुँच अपने परिवार से मिला, तो उसके प्राण में कितना आनंद उमड़ रहा होगा? कोई अचरज नहीं है कि जब उसके घराने को पता चला कि बिलकुल उसी समय जब येशु ने कहा था कि तेरा पुत्र जीवित है वह चंगा हो गया था, उन सभी ने विश्वास किया। इस आश्चर्य-कर्म ने कई जीवनों को छुआ न केवल पुत्र के जीवन को। इसपर ध्यान देना रुचिकर है कि आगे चल के, येशु के पास ऐसे दो लोग थे जो अपने व्यक्तिगत संसाधनों से उसकी सेवा करते थे, हेरोदेस के भण्डारी खोजा की पत्नी योअन्ना और सूसन्नाह। (लूका 8:1-3) राजा हेरोदेस का निवास कफरनहूम में था। शायद यह वही परिवार था। हम निश्चित तो नहीं कह सकते, लेकिन यह मान लेना तार्किक होगा कि यह परिवार इस तरह से छुआ गया था कि वह येशु की सेवकाई का समर्थन करना चाहते थे। हम कभी नहीं जान सकते कि एक भला कार्य बदले में हमें कैसे आशीषित कर सकता है। (सभोपदेशक 11:1)

शायद आप एक प्रश्न और प्रार्थना के साथ समाप्त करना चाहें:
आप क्या सोचते हैं कि औरों ने या आपने अपने विश्वास पर क्या सीमाएं लगाई हैं? क्या यह आपके गृहस्थान से आई हैं? क्या यह आपकी स्वयं की उस छवि से आई हैं जिससे आपको मुक्त होना है? क्या परमेश्वर ने आपको कुछ ऐसा करने को कहा है जिससे नमान की तरह आपके मन का भी अपमान हुआ हो? बाद में इसके बारे में बातचीत और प्रार्थना करें।

प्रार्थना: पिता, मेरे मन और हृदय को उस सभी के लिए खोल जो तेरे पास मेरे लिए है। मुझे अपने ऊपर या औरों पर सीमाएं :लगाने से दूर रख।

कीथ थॉमस
नि:शुल्क बाइबिल अध्यन के लिए वेबसाइट: www.groupbiblestudy.com
इ-मेल: keiththomas7@gmail.com